



**भा.वा.अ.शि.प. - वर्षा वन अनुसंधान संस्थान**  
**ICFRE - RAIN FOREST RESEARCH INSTITUTE**  
**भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद**  
**INDIAN COUNCIL OF FORESTRY RESEARCH & EDUCATION**



**भा.वा.अ.शि.प.-व.व.अ.सं. ने होलोंगापार गिबबन अभयारण्य के प्रशिक्षुओं के लिए शैक्षिक क्षेत्र भ्रमण आयोजित की**

होलोंगापार गिबबन अभयारण्य में क्षमता-निर्माण कार्यक्रम में हिस्सा ले रहे 18 प्रशिक्षुओं के एक समूह ने 19 जून 2026 को अपनी एजुकेशनल और फ़ील्ड विज़िट गतिविधियों के तहत भा.वा.अ.शि.प.- वर्षा वन अनुसंधान संस्थान, जोरहाट का दौरा किया। प्रशिक्षुओं के साथ 'आरण्यक' (Aaranyak) के डॉ. दिलीप छेत्री भी थे, जो इस कार्यक्रम का मार्गदर्शन किया। इस कार्यक्रम का मकसद जैव-विविधता संरक्षण और प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन में ज्ञान और कौशल को बढ़ाना है। संस्थान के समूह समन्यवक अनुसंधान श्री आर. के. कलिता ने टीम का स्वागत किया और संस्थान के बारे में जानकारी दी। उन्होंने 'वन-आधारित स्वरोज़गार के अवसर और व.व.अ.सं. की भूमिका' पर एक प्रस्तुति दिया। अपनी दौरे के दौरान, प्रतिभागियों को संस्थान की अनुसंधान और प्रदर्शन सुविधाओं का फ़ील्ड टूर कराया गया। उन्होंने बैम्बूसेटम का दौरा किया, जहाँ उन्हें संस्थान द्वारा संरक्षित बांस की विभिन्न प्रजातियों के बारे में बताया गया और उनके पारिस्थितिक, आर्थिक और संरक्षण संबंधी महत्व के बारे में जानकारी दी गई। प्रशिक्षुओं ने संस्थान की नर्सरी का भी दौरा किया और आधुनिक नर्सरी तकनीकों, पौधों के प्रसार के तरीकों और वानिकी व पर्यावरण पुनर्स्थापना कार्यक्रमों के लिए अच्छी गुणवत्ता वाले पौधे तैयार करने के बारे में जानकारी हासिल की।

समूह ने संस्थान की विभिन्न अनुसंधान और विस्तार सुविधाओं को भी देखा, जिसमें बांस संग्रहालय शामिल है। यह म्यूज़ियम पूर्वोत्तर क्षेत्र में बांस की विविधता, उसके उपयोग और सांस्कृतिक महत्व को प्रदर्शित करता है। यह फ़ील्ड विज़िट वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी श्री कुमुद बोरा, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी श्री भुबन कछारी और तकनीकी अधिकारी श्री एन. सी. दास के मार्गदर्शन में आयोजित की गई थी। इस दौरे ने प्रशिक्षुओं को वानिकी अनुसंधान और संरक्षण के व्यावहारिक पहलुओं को समझने का एक बेहतरीन मौका दिया। प्रतिभागियों ने संस्थान की गतिविधियों में गहरी दिलचस्पी दिखाई और ज्ञानवर्धक फ़ील्ड विज़िट की सराहना की। यह कार्यक्रम ज्ञान के आदान-प्रदान के लिए एक शानदार मंच साबित हुआ और इसने जैव-विविधता संरक्षण और सतत विकास में वैज्ञानिक अनुसंधान की भूमिका के बारे में जागरूकता बढ़ाने में मदद की।



## **ICFRE-RFRI Hosts Trainees From Hollongapar Gibbon Sanctuary For Educational Field Exposure**

A group of 18 trainee participants undergoing a capacity-building programme at the Hollongapar Gibbon Sanctuary visited ICFRE-Rain Forest Research Institute, Jorhat on 19 June, 2026 as part of their educational and field exposure activities. The trainees were accompanied by Dr. Dilip Chetry of Aaranyak, who is guiding the programme aimed at enhancing knowledge and skills in biodiversity conservation and natural resource management. Shri R. K. Kalita, Group Coordinator (Research) of the Institute welcomed the team and spoke about the Institute. He delivered a presentation on 'Forest Based Self-Employment Opportunities and Role of RFRI'. During their visit, the participants were taken on field tour of the Institute's research and demonstration facilities. They visited the Bambusetum, where they were introduced to the rich diversity of bamboo species maintained by the Institute and learned about their ecological, economic, and conservation significance. The trainees also visited the Institute nursery and gained insights into modern nursery techniques, propagation methods, and the production of quality planting materials for forestry and environmental restoration programmes.

The group further explored various research and extension facilities of the Institute, including the Bamboo Museum, which showcases the diversity, utilization, and cultural importance of bamboo in the North Eastern Region. Field visit was conducted under the guidance of Shri Kumud Bora, Senior Technical Officer; Shri Bhuban Kachari, Senior Technical Officer and Shri N. C. Das, Technical Officer. The visit provided the trainees with a valuable opportunity to understand the practical aspects of forestry research and conservation. The participants expressed keen interest in the Institute's activities and appreciated the informative field exposure. The programme served as an excellent platform for knowledge exchange and helped strengthen awareness about the role of scientific research in biodiversity conservation and sustainable development.



## Photo Gallery: Highlights of the event: -



